IBT™
IBT INSTITUTE PVT. LTD.

सामान्य ज्ञान

COURSE BOOK

Helpline : 96 96 96 00 29 | 0181-4606260
www.ibtindia.com

विषय-सूची

भाग-1 - इतिहास

प्राचीन इतिहास

पाठ 1 – हड़प्पा या सिन्धु घाटी की सभ्यता 3
पाठ 2 – वैदिक काल 7
पाठ 3 – महाजनपदों का उदय एंव बौद्धधर्म 12
पाठ 4 – मगध साम्राज्य और मौर्य साम्राज्य 17
पाठ 5 – गुप्त साम्राज्य एंव वर्द्धन वंश 19

मध्यकालीन भारत

पाठ 6 – भारत पर अरबों का आक्रमण 21
पाठ 7 – राजपूत काल 22
पाठ 8 – दिल्ली सल्तनत 24
पाठ 9 – मुगल साम्राज्य 28
पाठ 10 – विजयनगर साम्राज्य एवं बहमनी राज्य 35
पाठ 11 – मराठा राज्य 36

आधुनिक इतिहास

पाठ 12 – 1857 का विद्रोह 38
पाठ 13 – गवर्नर, गवर्नर जनरल तथा वॉयसराय 40
पाठ 14 – भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन 43
पाठ 15 – विश्व इतिहास 55

भाग-2 - भूगोल

पाठ 1 – पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास 67
पाठ 2 – पृथ्वी की आंतरिक संरचना एवं शैल निर्माण 72
पाठ 3 – वायुमंडल का सघंटन तथा वायुमंडलीय जल 74
पाठ 4 – महासागरों और महाद्वीपों का वितरण 79
पाठ 5 – भारत की भौगोलिक स्थिति एवं संरचना 93
पाठ 6 – भारत की नदियाँ 98
पाठ 7 – भारतीय जलवायु 101
पाठ 8 – भारतीय मृदा का वर्गीकरण 106
पाठ 9 – प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव मंडल 108
पाठ 10 – भारतीय कृषि व्यवस्था 111
पाठ 11 – खनिज तथा ऊर्जा संसाधन 114
पाठ 12 – पर्यावरण 120

भाग-3 - भारतीय राजव्यवस्था एवं अभिशासन

पाठ 1 – संविधान एवं संविधान का निर्माण 131
पाठ 2 – संविधान की प्रस्तावना/उद्देशिका 137
पाठ 3 – संघीय कार्यपालिक 144
पाठ 4 – संघ की विधायिका 154
पाठ 5 – राज्य की कार्यपालिका 161
पाठ 6 – भारत की न्यायपालिका 164
पाठ 7 – संवैधानिक और गैर-संवैधानिक निकाय 170
पाठ 8 – आपात उपबंध 187
पाठ 9 – पंचायती राज व्यवस्था, केन्द्र राज्य संबंध 191
पाठ 10 – राजनीतिक दल और प्रमुख संविधान संशोधन 206
पाठ 11 – राजभाषा, संघ राज्य क्षेत्र का प्रशासन 212

भाग-4 - अर्थव्यवस्था

पाठ 1 – भारतीय अर्थव्यवस्था 217
पाठ 2 – राष्ट्रीय आय 218
पाठ 3 – भारत में आर्थिक सुधार 222
पाठ 4 – भारत में आर्थिक नियोजन 227
पाठ 5 – भारतीय कृषि 232
पाठ 6 – भारतीय वित्त बाजार 236

पाठ 7 – लोक वित्त 245
पाठ 8 – गरीबी एवं बेरोजगारी 247
पाठ 9 – आर्थिक शब्दावली 251

भाग-5 – विज्ञान

जीव विज्ञान

पाठ 1 – जीव विज्ञान 255
पाठ 2 – जीवधारियों का वर्गीकरण 256
पाठ 3 – सूक्ष्म जीव 268
पाठ 4 – कवक एवं पादप जगत 260
पाठ 5 – प्राणी जगत 263
पाठ 6 – कोशिका 266
पाठ 7 – कोशिका विभाजन 271
पाठ 8 – वनस्पति विज्ञान 273
पाठ 9 – जन्तु ऊतक 282
पाठ 10 – मानव शरीर 283
पाठ 11 – पाचन तंत्र 285
पाठ 12 – श्वसन 291
पाठ 13 – परिसंचरण तंत्र 294
पाठ 14 – तंत्रिका तंत्र 298
पाठ 15 – उत्सर्जन तंत्र 300
पाठ 16 – अंत: स्रावी तंत्र 302
पाठ 17 – मानव रोग 304
पाठ 18 – जीव विज्ञान से संबंधित खोज 306

भौतिकी

पाठ 1 – यांत्रिकी 307
पाठ 2 – ध्वनि 313
पाठ 3 – ताप 315
पाठ 4 – गुरुत्वाकर्षण 319
पाठ 5 – प्रकाश 321
पाठ 6 – चुम्बकत्व 328
पाठ 7 – विद्युत 331
पाठ 8 – भौतिकी के महत्त्वपूर्ण नियम 334
पाठ 9 – भौतिकी से संबंधित खोज एवं अविष्कार/एस.आई मात्रक 345

रसायन विज्ञान

पाठ 1 – रसायन विज्ञान 347
पाठ 2 – तत्व 350
पाठ 3 – परमाणु संरचना 352
पाठ 4 – रासायनिक बंधन 354
पाठ 5 – अम्ल, भस्म एवं लवण 356
पाठ 6 – कार्बन एवं उसके यौगिक 360
पाठ 7 – धातु, अधातु और मिश्रतधातु 363
पाठ 8 – मानव निर्मित पदार्थ 367
पाठ 9 – रासायनिक यौगिक 370
पाठ 10 – औद्योगिक रसायन 373
पाठ 11 – रसायन विज्ञान से संबंधित खोज/अविष्कार 383
विविध . 384

भाग–1

इतिहास

1

हड़प्पा या सिन्धु घाटी की सभ्यता

एक दृष्टि से इतिहास को तीन भागों में बाँटा गया है।

(*i*) **प्रागैतिहास**-इतिहास का वह काल जिसके सम्बन्ध में कोई लिखित सामग्री प्राप्त नहीं है।

(*ii*) **आद्य-इतिहास**-इतिहास का वह काल जिससे सम्बन्धित लिखित सामग्री प्राप्त तो होती है लेकिन वह या तो पढ़ी नहीं गयी है या वह उस समय न लिखी जाकर बाद में लिखी गई। सैंधव सभ्यता को इसीलिए आद्य-इतिहास से सम्बन्धित किया जाता है, क्योंकि उसकी लिपि अभी पढ़ी नहीं जा सकी है एवं वैदिककाल को इसलिए आद्य-इतिहास के अन्तर्गत रखा जाता है, क्योंकि वेदों को संकलन वैदिक काल (1500 ई॰ पू॰ से 600 ई॰ पू॰) में न होकर बाद में 400 ई॰ पू॰ के लगभग हुआ।

(*iii*) **इतिहास**-इतिहास का वह काल जिससे सम्बन्धित लिखित सामग्री प्राप्त होती है एवं उसे पढ़ा जा सका है। भारत में यह काल छठीं शताब्दी ई॰ पू॰ से प्रारम्भ होता है।

तिथि-

- **रेडियो कार्बन तिथि**-2300-1750 ई॰ पू॰ (सर्वाधिक प्रामाणिक एवं सर्वमान्य) 2500 ई॰ पू॰ से 1500 ई॰ पू॰ का भी उल्लेख।

खोज-

- करांची से लाहौर तक रेलवे लाइन बिछाने के क्रम में 1856 ई॰ में हड़प्पा के टीलों से ईंटें निकालते **समय जान विलियम ब्रन्टन** को कुछ पुरानी वस्तुएँ प्राप्त हुई, जिन्हें उन्होंने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सर्वेयर **जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम** के पास भेजा।
- कनिंघम ने 1853 तथा 1856 ई॰ में हड़प्पा का दौरा किया, किन्तु हड़प्पा सभ्यता के महत्त्व को न जान सके।
- भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक **सर जॉन मार्शल** ने निर्देश पर सन् 1921 ई॰ में **दयाराम साहनी** ने वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के शाहीवाल (माण्टगोमरी) जिले में रावी नदी के बायें तट पर स्थित, **हड़प्पा के टीले** का पुनर्नवेषण कि यह एक अत्यन्त प्राचीन सभ्यता थी।
- वर्ष 1922 ई॰ में **राखाल दास बनर्जी** ने सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दायें तट पर **मोहनजोदड़ों के टीलों** का पता लगाया।
- दयाराम साहनी तथा राखाल दास बनर्जी के प्रतिवेदनों के फलस्वरूप भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल का ध्यान सर्वप्रथम हड़प्पा सभ्यता के महत्त्व की ओर आकृष्ट हुआ।
- इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता की खोज दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी द्वारा कराये गये उत्खननों के फलस्वरूप हुई।
- 1924 ई॰ में सर जॉन मार्शल ने 'सिन्धु सभ्यता' की विधिवत घोषणा की।

नामकरण-

(*i*) सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थल की खुदाई होने के कारण इसका नामकरण '**हड़प्पा की सभ्यता**' के नाम से किया गया।

(*ii*) हड़प्पा के बाद इससे सम्बन्धित अन्य स्थलों की खोज और उनके सिंधु नदी की घाटी में केन्द्रित होने के कारण '**सिन्धु घाटी की सभ्यता**' कहा गया।

(*iii*) बाद के अनुसंधानों से इससे सम्बन्धित स्थल सिंधु घाटी के बाहर अफगानिस्तान, पाकिस्तान एवं भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैले होने के कारण पुनः इसका नामकरण '**हड़प्पा की सभ्यता**' किया गया। क्योंकि यह विलुप्त सभ्यता का प्रथम ज्ञात स्थल था।

(*iv*) यह '**ताम्र पाषाणिक सभ्यता**' नाम से भी जानी जाती है क्योंकि इस काल में ताँबे एवं पत्थर के औज़ार बनाये जाते थे।

(*v*) यह '**कांस्य युगीन**' सभ्यता के नाम से भी जानी जाती है क्योंकि इस काल में ताँबा में टिन नामक धातु मिलाकर कांसा तैयार किया जाता था।

स्त्रोत-

- मात्र **पुरातात्विक स्त्रोतों** से ही हड़प्पा सभ्यता के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है।

विस्तार-

- 1947 ई॰ में हड़प्पा सभ्यता से सम्बन्ध 40 बस्तियाँ ही ज्ञात थीं।
- वर्तमान में भारतवर्ष, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान में 1400 से ज्यादा हड़प्पा बस्तियाँ प्रकाश में आई हैं।

- इनमें से 925 बस्तियाँ भारत में तथा 475 पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में स्थित हैं।
- **हड़प्पा सभ्यता के क्षेत्र की सीमा पश्चिम में सत्कागेंडोर (बलूचिस्तान) तक, पूरब में आलमगीरपुर (ज़िला मेरठ, उत्तर प्रदेश) तक, दक्षिण में दाइमाबाद (ज़िला अहमदनगर, महाराष्ट्र) तथा उत्तर में माण्डा (ज़िला अखनूर, जम्मू और कश्मीर) तक है।**
- हड़प्पा सभ्यता का कुल भौगोलिक क्षेत्र मिस्त्र की सभ्यता के क्षेत्र में 20 गुना तथा मिस्त्र और मेसोपोटामियाँ की सभ्यता के कुल सम्मिलित क्षेत्र से 12 गुना विशाल है।
- इसका क्षेत्रफल लगभग 12,50,000 वर्ग कि॰ मी॰ है।

सिन्धु या हड़प्पा सभ्यता की सामान्य विशेषताएँ

- यह एक नगरीय सभ्यता (Urban civilization) थी।
- हड़प्पा सभ्यता के स्थलों में पूर्वी तथा पश्चिम में दो टीले मिलते हैं।
- नगर के पश्चिमी टीले पर दुर्ग तथा पूर्वी टीले पर जन सामान्य की आवासीय बस्तियाँ होती थीं, किन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि बड़े सार्वजनिक भवन, बाजार, छोटे-बड़े आवासीय मकान तथा शिल्प-शालाएँ लगभग सभी क्षेत्रों में मिली हैं।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ों का मात्र दुर्ग अथवा किला क्षेत्र रक्षा प्राचीर से घिरा था।
- सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती (आक्सफोर्ड प्रणाली) हुई नगर को पाँच-छह भागों में बाँटती थी।
- सड़कों के दोनों किनारों पर पक्की नालियाँ बनायी जाती थी, जिन्हें बड़ी ईंटों अथवा पत्थर की चटाइयों से ढँका जाता था। नालियों में स्थान-स्थान पर गड्ढे बने थे।
- मकान प्रायः दो मंजिले होते थे।
- मकान प्रायः पक्के होते थे, किन्तु कालीबांग के मकान कच्ची ईंटों से बने थे।
- एक मकान में प्रायः एक आँगन, जिसके तीन या चारों ओर कमरे, स्नानघर, रसोई तथा एक कुआँ हुआ करता था। मकान में सड़क की ओर कोई खिड़की नहीं होती थी।
- मकान की खिड़कियाँ एवं दरवाज़े गलियों में खुलते थे।

सामाजिक जीवन (Social Life)

- सैन्धव समाज चार वर्गों में बाँटा गया है-विद्वान्, योद्धा, व्यापारी तथा शिल्पकार एवं श्रमिक।
- नवीन मतानुसार समाज के तीन वर्ग थे-विशिष्ट वर्ग, मध्यम वर्ग तथा निर्बल वर्ग।
- समाज की इकाई परिवार था। परिवार **मातृसत्तात्मक** होता था।
- समाज में सती प्रथा, पर्दा आदि सामाजिक बुराइयाँ नहीं थी।
- **दास प्रथा का प्रचलन** नहीं था।
- मनोरंजन का प्रमुख साधन-पाँसा खेलना था। अन्य साधन थे-शिकार तथा मछली मारना आदि।

आर्थिक जीवन (Economic Life)

- कृषि कुल नौ फसलों के उगाये जाने के साक्ष्य मिले हैं।
- जौ, गेहूँ ब्रांसिका जुन्सी (सरसों जैसी बिना पहचानी गई फसल)। चावल (धान), सरसों, तिल, चना, कपास मटर।
- घोड़ा नहीं पाला जाता था यद्यपि उसका अस्तित्व था क्योंकि लोथल, सुरकोटद तथा कालीबंगा से घोड़े की अस्थियाँ मिली हैं।
- मुद्राओं पर भेड़, बकरियाँ, ककुदमान साँड़ (कूबड़दार साँड), भैंस, हाथी आदि के चित्र मिले हैं।

उद्योग तथा तकनीक

कताई, बुनाई मुख्य व्यवसाय था।

- ताँबे के साथ टिन मिलाकर काँसा तैयार किया जाता था तथापि औजार, बर्तन, हथियार आदि बनाने के लिए अधिकांशतः शुद्ध ताँबे का ही प्रयोग किया जाता था।
- शीशे के बाट तथा छोटी-छोटी तश्तरिया बनाई जाती थी।
- सोने तथा चाँदी के आभूषण भी बनाये जाते थे।
- हड़प्पा लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था। भारतीयों को लोहे का ज्ञान 1000 ई॰ पू॰ के लगभग हुआ।
- **व्यापार तथा वाणिज्य :** कृषि उपज, औद्योगिक कच्ची सामग्री, ताम्र खनिज, रत्न, उपरान्त आदि का व्यापार किया जाता था।
- आन्तरिक एवं विदेशी दोनों व्यापार उत्कर्ष पर थे।
- व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था।
- व्यापार की सबसे प्रमुख वस्तु सूती वस्त्र था। आन्तरिक व्यापार में गाँव से खाद्य सामग्री के बदले में सूती वस्त्र तथा धातु निर्मित वस्तुएँ गाँवों को भेजी जाती थीं। सैन्धव वासियों का विदेशी व्यापार-मध्य एशिया, अफगानिस्तान, ईरान, तुर्कमेनिस्तान, बहरीन द्वीप तथा मेसोपोटामियाँ की 'सुमेरिया सभ्यता' से था।

सैन्धव वासियों द्वारा विभिन्न देशों से प्राप्त वस्तुएँ :

- टिन — अफगानिस्तान से
- चाँदी — अफगानिस्तान, ईरान
- लाजवर्द — बदख्शां (अफगानिस्तान) तथा कश्मीर
- सीसा — अफगानिस्तान, ईरान
- सोना — दक्षिण भारत से
- ताँबा — (खेतड़ी खान) राजस्थान से
- सेलखड़ी — बलूचिस्तान (पाकिस्तान) से

- कार्नेलियन मनके गुजरात तथा सिन्ध
- फिरोजा और हरिताश्म (मध्य एशिया) ईरान से
- जम्बुमणि महाराष्ट्र से
- गोमेद, सिक्थ स्फटिक सौराष्ट्र (गुजरात) से
- हड़प्पा कालमें गणना हेतु 16 तथा इसके गुणकों का प्रयोग किया जाता था।
- अधिकांश बाँट घनाकार थे।

धार्मिक जीवन :

- सैन्धव काल में सर्वाधिक पूजा **मातृदेवी की होती** थी। यह उर्वरता की देवी के रूप में पूजी जाती थी।
- हड़प्पा वासी पशुओं प्राकृतिक अवस्था में अथवा उनमें रहने वाली आत्माओं के रूप में पूजा जाता था।
- वृक्षों को उनकी प्राकृतिक अवस्था में अथवा उनमें रहने वाली आत्माओं के रूप में पूजा जाता था।
- हड़प्पावासी लिंग और योनि के प्रतीकों की भी पूजा करते थे।
- कालीबंगा में मिली एक मिट्टी की पट्टिका में लिंग और योनि के प्रतीक एक साथ बने हैं।
- हड़प्पा लोग **योगासन** भी करते थे।
- धातु मूर्तियों में मोहनजोदड़ों से प्राप्त 11.5 से.मी. लम्बी **नर्तकी की कांस्य** प्रतिमा प्रमुख है।
- दाइमाबाद से जानवरों की कांस्य मूर्तियाँ मिली हैं।
- **प्रमुख पशु मृण्मूर्तियाँ :** बैल, भैंसा, गैण्डा, कछुआ, घड़ियाल, बन्दर, भेड़ा, बकरा, खरगोश आदि हैं।
- कूबड़ वाले तथा बिना कूबड़ वाले दोनों प्रकार के बैलों की मूर्तियाँ मिली हैं।
- गाय एवं घोड़े की मृण्मूतियाँ नहीं मिली है।
- **मुहरें :** 2,500 से अधिक पाई गयी हैं।
- ये अधिकांशत : सेलखड़ी की बनी है।
- **उपयोग :** व्यापारिक वस्तुओं की गाँठों पर छाप लगाना।
- **मनके :** सेलखड़ी, काँचली मिट्टी, शंख, सीप, हाथी दाँत, सोने, चाँदी, मिट्टी के बने प्राप्त हुए हैं। मनका बनाने का कारखाना चन्हदड़ो में था।

लिपि

दाईं से बाईं ओर लिखी जाने वाली हड़प्पाई-लिपि में 400 से 500 तक संकेत चिन्ह हैं।

- हण्टर ने इसे भाव चित्रात्मक कहा है।
- जब अभिलेख एक से अधिक पंक्तियों का होता था तो प्रथम पंक्ति दायें से बायें तथा दूसरी पंक्ति बाईं से दाईं ओर लिखी जाती थी।

सभ्यता से संबंधित पुरास्थल

महत्त्वपूर्ण पुरास्थल	–	**महत्त्वपूर्ण विशेषताएं**
कालीबंगा	–	दुर्गीकृति निचला शहर, भवन निर्माण में कच्ची ईंटों का प्रयोग।
लोथल	–	बंदरगाह।
मोहनजोदड़ो	–	अन्नागार।
धौलावीरा	–	साइन बोर्ड, अति उत्तम जलप्रबंध, नगर तीन भागों में विभाजित।
रोपड़	–	नवपाषाण, ताम्रपाषाण, सिन्धु सभ्यता तीनों के अवशेष, मानव के साथ दफनाया कुत्ता।
मोहनजोदड़ो	–	कालीबंगा व हड़प्पा के समान नगर योजना।
आमरी	–	गैंडे का साक्ष्य।

सभ्यता से संबंधित महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ

महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ	–	**प्राप्ति स्थल**
तांबे का पैमाना	–	हड़प्पा
सबसे बड़ी ईंट	–	मोहनजोदड़ो
केश प्रसाधन	–	हड़प्पा
वक्राकार ईंटें	–	चन्हूदड़ो
जूते खेत के साक्ष्य	–	कालीबंगा
मनका बनाने का कारखाना	–	चन्हूदड़ो, लोथल
फारस की मुद्रा	–	लोथल
बिल्ली के पैरों के अंक वाली ईंटें	–	चन्हूदड़ो
युगल शवाधान	–	लोथल
मिट्टी का हल	–	बनावली
चालाक लोमड़ी के अंकन वाली मुहर	–	लोथल
घोड़े की अस्थियाँ	–	सुरकोटदा
हाथी दाँत का पैमाना	–	लोथल
आटा पीसने की चक्की	–	लोथल
ममी के प्रमाण	–	लोथल
चावल के साक्ष्य	–	लोथल, रंगपुर
सीप से बना पैमाना	–	मोहनजोदड़ो
काँसे से बनी नर्तकी की प्रतिमा	–	मोहनजोदड़ो

सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल तथा खोजकर्ता

स्थल	अवस्थिति	खोजकर्ता	वर्ष	नदी/सागर तट
हड़प्पा	मॉण्टगोमरी (पाकिस्तान)	दयाराम साहनी	1921	रावी
मोहनजोदड़ो	लरकाना (पाकिस्तान)	राखालदास बनर्जी	1922	सिंधु
रोपड़	पंजाब	यज्ञदत्त शर्मा	1953	सतलुज
लोथल	अहमदाबाद (गुजरात)	रंगानाथ राव	1954	भोगवा नदी
कालीबंगा	गंगानगर (राजस्थान)	ए.घोष	1953	घग्घर
चन्हूदड़ो	सिंध (पाकिस्तान)	एन.जी.मजूमदार	1934	सिन्धु
सुत्कागेडोर	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)	ऑरेल स्टाइन	1927	दाश्क
कोटदीजी	सिंध (पाकिस्तान)	फजल अहमद खाँ	1955	सिंधु
आलमगीरपुर	मेरठ	यज्ञदत शर्मा	1958	हिण्डन
सुरकोत्दा	कच्छ (गुजरात)	जगपति जोशी	1967	-
रंगपुर	काठियावाड़ (गुजरात)	माधोस्वरूप वत्स	1953-54	मादर
बालाकोट	पाकिस्तान	डेल्स	1979	अरब सागर
सोत्काकोह	पाकिस्तान	-	-	अरब सागर
बनावली	हिसार (हरियाणा)	आर.एस.बिष्ट	1973-74	-
धौलावीरा	गुजरात (कच्छ)	जे.पी.जोशी	1967	-
मांडा	जम्मू-कश्मीर	-	-	चिनाब
दैमाबाद	महाराष्ट्र	आर.एस.विष्ट	1990	प्रवरा
देसलपुर	गुजरात	के.वी.सुन्दराजन	1964	-
भगवानपुरा	हरियाणा	जे.पी.जोशी	सरस्वती नदी	

स्मरणीय तथ्य

- मोहनजोदड़ो का अर्थ होता है-मृदकों का टीला।
- कालीबंगा का अर्थ काले रंग की चूड़ियों से लगाया जाता है।
- लोथल का सबसे महत्त्वपूर्ण निर्माण डॉक-यार्ड या गोदी है।
- बनवाली से अच्छे किसम के जौ, सरसों और तिल मिले हैं।
- अग्निकुंड लोथल और कालीबंगा से प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा और बनवाली में दो सांस्कृतिक धाराओं प्राक्-हड़प्पा एवं हड़प्पा-कालीन संस्कृति के दर्शन होते हैं।
- हड़प्पा काल में व्यापार का माध्यम वस्तु विनिमय था।
- कालीबंगा के मकान कच्ची ईंटों से बने थे।
- चावल के प्रथम साक्ष्य लोथल से प्राप्त हुए हैं।
- हड़प्पा मुहरों पर सर्वाधिक एक श्रृंगी पशु का अंकन मिलता है।
- घोड़े की जानकारी मोहनजोदड़ो, लोथल तथा सुरकोटदा से प्राप्त हुई है।
- स्वास्तिक चिह्न हड़प्पा संस्कृति की देन है।
- चन्हूदड़ो एकमात्र पुरास्थल है जहां से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- हड़प्पा सभ्यता का परवर्ती काल रंगपुर तथा राजदी में परिलक्षित होता है।
- हड़प्पा में अन्नागार गढ़ी से बाहर व मोहनजोदड़ो में गढ़ी के अंदर मिले हैं।
- आर-37 कब्रिस्तान हड़प्पा से प्राप्त हुआ है।

विद्वान	पतन के कारण
जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
गार्डन चाइल्ड व व्हीलर	बाह्य व आर्यों का आक्रमण
जॉन मार्शल, मैके एवं एस.आर.राव	बाढ़
ऑरेल स्टाइन	जलवायु परिवर्तन
एम.अआर. साहनी एवं आर.एल. रेईक्स	जल प्लावन
के.यू.आर.केनेडी	प्राकृतिक आपदा
फेयर सर्विस	पारिस्थितिकी असुंतलन

****

2 वैदिक काल

- **1400 ई॰ पू॰ के 'बोगज-कोई'** (एशिया माइनर) के अभिलेख में हिट्टाइट तथा मित्तानी राजाओं के मध्य सन्धि में, वैदिक देवताओं (इन्द्र, वरुण, मित्र तथा दो नास्त्य) के उल्लेख से यह ज्ञात होता है कि ऋग्वेद उस समय से काफी पूर्व विद्यमान था।

तिथि

- सामान्यत : स्वीकृत तिथि 1500 ई॰ पू॰ से 600 ई॰ पू॰ तक है।
- वैदिक काल को दो भाग में वर्गीकृत किया जाता है-
  (1) ऋग्वैदिक काल जिस, ज्ञान ऋग्वेद (1500 ई॰ पू॰ से 1000 ई॰ पू॰ तक) से होता है।
  (2) उत्तर वैदिक काल जिसका ज्ञान ऋग्वेद से भिन्न वैदिक साहित्य (1000 ई॰ पू॰ से 600 ई॰ पू॰ तक) से होता है।

स्रोत : वैदिक कालीन, अर्थात् 1500 से 600 ई॰ पू॰ तक का, भारतीय इतिहास जानने के दो प्रमुख स्रोत हैं-

(1) **साहित्यिक :** वेद, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद
(2) **पुरातात्विक**

वैदिककालीन साहित्यिक स्रोत

- **वेद :** सूक्तों, प्रार्थनाओं, स्तुतियों, मंत्र-तन्त्रों तथा यज्ञ सम्बन्धी सूत्रों के संग्रह हैं।
- संकलनकर्ता : **महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास हैं।**
- वेदों को संहिता भी कहा जाता है क्योंकि यह वेदव्यास द्वारा संकलित किये गये थे।
- वेदों का एक नाम **'श्रुति'** भी है, क्योंकि संकलित किये जाने से पूर्व यह गुरु-शिष्य परम्परा में सुनाये/कण्ठस्थ कराये जाते थे।
- **वेदों की संख्या चार है-**
  (1) ऋग्वेद (सर्वाधिक प्राचीन) : यह सूक्तों का संग्रह है
  (2) यजूर्वेद : यज्ञ सम्बन्धी सूक्तों का संग्रह है।
  (3) सामवेद : गीतों का संग्रह हैं, इसके अधिकांश गीत ऋग्वेद से लिये गये हैं।
  (4) अथर्ववेद : तन्त्र मन्त्रों का संग्रह है।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' कहा जाता है।
  (1) **ऋग्वेद :** इसमें विभिन्न देवताओं की स्तुति में गाये गये मंत्रों का संग्रह है।
- इसमें कुल **10 मण्डल, 1028 सूक्त तथा 10462 मन्त्र** अथवा ऋचा या श्लोक हैं।
- ऋग्वेद के तीन पाठ मिलते हैं :
(1) **साकल :** 10 मण्डल तथा 1017 सूक्त।
(2) **बालखिल्य :** 11 सूक्त
(3) **वाष्कल :** 56 मंत्र
- ऋग्वेद के दस मण्डलों में दूसरे से सातवें मण्डल तक प्राचीन माने जाते हैं, जबकि 1, 8, 9 तथा 10 वाँ मण्डल बाद में जोड़े गये माने जाते हैं।

ऋग्वेद के प्रमुख मण्डलों के रचयिता

मण्डल	रचयिता
द्वितीय	गृत्समद
तृतीय	विश्वामित्र
चतुर्थ	वामदेव
पंचम	अत्रि
षष्टम	भारद्वाज
सप्तम	वशिष्ठ
अष्टम	कण्व तथा अंगिरस

- ऋग्वेद में उल्लिखित महत्त्वपूर्ण देवियाँ-इन्द्राणी, रोदसी, श्रद्धा तथा धृति, अदिति, उषा आदि।
- ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में गायत्री मंत्र मिलता है।
- ऋग्वेद के दशम मण्डल (पुरुष सुक्त) में चातुर्वण्य समाज की कल्पना मिलती है।
- ऋग्वेद में उल्लिखित प्रसिद्ध नारियाँ-विश्पला, मुद्गलानी।
- ऋग्वेद में 'नियोग' तथा विधवा विवाह का आभास मिलता है।
- **ऋग्वेद के ब्राह्मण :** ऐतरेय ब्राह्मण का एक भाग है। कौशितिकी ब्राह्मण के अन्त के आरण्यक भाग को 'कौशितिकी आरण्यक' तथा 'कौशितिकी उपनिषद' कहते हैं।
- ऋग्वेद का ऋत्विक (वेद सम्बन्धी कार्य करने वाला व्यक्ति) **होता** कहलाता है।
- होता का कार्य देवताओं को यज्ञ में आहूत करना तथा ऋचा-पाठ करते हुए स्तुति करना था।
- आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद कहा जाता है।